संस्कृतिकरण (Sanskritisation)

एम.एन.श्रीनिवास ने "संस्कृतिकरण" शब्द का प्रयोग कर्नाटक राज्य के अंतर्गत "कुर्ग" जाति के लोगों के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में होने वाले परिवर्तनों के विश्लेषण के लिए किया। इस शब्द का पहली बार प्रयोग एम.एन. श्रीनिवास ने 1952 में अपनी पुस्तक " Religion and Society Among the Coorgs of South India" मैं किया था। मैसूर के कुर्ग लोगों का अध्ययन करते समय श्रीनिवास ने पाया कि निम्न जाति के लोग ब्राह्मणों की कुछ प्रथाओं को अपनाने तथा अपनी स्वयं की को प्रथाओं, जैसे- मांस खाने, शराब पीने, आदि छोड़ने में लगे हुए थे। वे ब्राह्मणों की भोजन संबंधी आदतों, वेश-भूषा तथा कर्मकांडों को अपना कर अपनी स्थिति को ऊंचा उठाने का प्रयास कर रहे थे। गतिशीलता की प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए श्रीनिवास ने प्रारंभ में "ब्राह्मणीकरण" शब्द का प्रयोग किया था। कुछ दिनों बाद श्रीनिवास ने कुछ कारणों से ब्राह्मणीकरण की जगह पर संस्कृतिकरण शब्द स्वीकार किया। वस्तुत: संस्कृतिकरण शब्द की व्यापकता में ब्राह्मणीकरण भी शामिल है।

एम.एन. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण की परिभाषा करते हुए कहा कि "संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत निम्न जाति के लोग ब्राह्मणी जीवन प्रणाली को अपनाते हैं, अर्थात संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिंदू जाति या कोई जनजाति अथवा कोई अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाज, कर्मकांड, विचारधारा और जीवन शैली पद्धति को बदलता है।

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया विशेष कर बन्द हिंदू सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत चलती है। परिवर्तन के आंतरिक स्रोत की प्रधानता एक बंद समाज की विशेषता है। जब व्यक्ति को समझ में आगे बढ़ने के सभी रास्ते खुले होते हैं, तो संस्कृतिकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी या शिथिल पड़ जाती है।

संस्कृतीकरण की विशेषताएं:-

संस्कृतिकरण की अवधारणा की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

1- संस्कृतीकरण का संबंध मुख्यतः निम्न जातियों की जीवन शैली में होने वाले परिवर्तनों से है। द्विज जातियों या प्रबल जातियों की प्रथाओं परंपराओं देवी देवताओं एवं जीवन शैली को अपना कर जाति संस्करण में ऊंचा उठाने का प्रयत्न को हम संस्कृतिकरण कहते हैं ।

2- संस्कृतीकरण की प्रक्रिया से संबंधित जातियों में मात्र पद्मूलक (positional)परिवर्तन होता है, न की संरचनात्मक (Structural), अर्थात जाति व्यवस्था की संरचना में कोई परिवर्तन नहीं होता है, बल्कि संबंधित जाति के पद सोपानक्रम में चढ़ाव मात्रा होता है।

3- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया केवल निम्न हिंदू जातियों में ही नहीं, बल्कि अर्द्ध-जनजातीय समूहों में भी पाई जाती है। भील गोंड ओरांव आदि जनजातीय समूहों ने हिंदू जीवन पद्धति को अपना कर ऊंचा उठने का प्रयास किया है।

4- संस्कृतिकरण के अनेक प्रारूप (मॉडल) हो सकते हैं, जैसे- ब्राह्मण, राजपूत वैश्य या अन्य प्रभावी जाति। संस्कृतीकरण से गुजरने वाली जातियां इनमें से किसी एक ही जाति के रीति-रिवाजों, प्रथाओं, खान-पान और जीवन शैली को अपना कर समाज में ऊपर उठने का दावा पेश कर सकती हैं।

5- संस्कृतीकरण सामाजिक गतिशीलता की एक सामूहिक प्रक्रिया है न कि व्यक्तिगत। अर्थात इसका संबंध किसी व्यक्ति या परिवार विशेष के जीवन में चलने वाली परिवर्तन की प्रक्रिया से नहीं है।

6- भारतीय संदर्भ में संस्कृतिकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया रही है।

7- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से गुजरने वाली जातियां संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विचारों में मूल्यों को भी स्वीकार कर लेती हैं तथा पाप-पुण्य, संसार, धर्म-कर्म, माया और मोक्ष आदि शब्दों का प्रयोग बातचीत में करने लगते हैं।

8- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के द्वारा सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के निमित्त एक विशेष संस्कृतिकरण करने वाली जातियां दो या तीन पीढ़ी पहले से अपना संबंध किसी उच्च जाति प्रभुत्वसंपन्न जाति से जोड़ती है।

9- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया संस्कृतिकरण से गुजरने वाली जाति की महत्वाकांक्षाओं एवं प्रयत्नों का सूचक है।

10- संस्कृतिकरण हिंदू ब्रहद परंपरा की सोपान कम विश्वदृष्टि का विरोध करती है। इसलिए कि परंपरा से हिंदू धर्म मानने वाली हर जातियों की सामाजिक स्थिति जन्म से निर्धारित होती है।

11- संस्कृतिकरण एक प्रकार का विरोधी आंदोलन है। संस्कृतिकरण के अंतर्गत एक ऐसी प्रतिस्पर्धा की प्रक्रिया चलती है, जिसके अंतर्गत अपने से ऊंची सामाजिक स्थिति को प्राप्त कर लेने की कोशिश की जाती है।

12- संस्कृतिकरण एक अनुभवाश्रित प्रक्रिया का नाम है ।